

कुल पृष्ठों की संख्या : 8

हायर सेकेण्डरी परीक्षा, मई—जून 2024

आदर्श उत्तर

**140**

विषय : अर्थशास्त्र

**Subject: ECONOMICS**

- 
- उ.1 सही विकल्प — (1×6=6)
- (i) (ब) व्यष्टि अर्थशास्त्र
  - (ii) (अ) एक से कम
  - (iii) (स) दीर्घकालीन
  - (iv) (स) प्रत्यक्ष
  - (v) (स) उपर्युक्त दोनों
  - (vi) (ब) अपूर्ण प्रतियोगिता बाजार
- उ.2 रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये — (1×7=7)
- (i) तृतीयक
  - (ii) 1949
  - (iii) प्रभावपूर्ण मांग
  - (iv) गैर — कर
  - (v) व्यापार
  - (vi) गुणात्मक
  - (vii) घनात्मक
- उ.3 सत्य/असत्य लिखिये — (1×6=6)
- (i) असत्य
  - (ii) सत्य
  - (iii) सत्य
  - (iv) असत्य
  - (v) सत्य
  - (vi) असत्य

उ.4 सही जोड़ी बनाईये –

(1×6=6)

- (i) (F) वस्तु की विभिन्न मूल्यों पर क्रय की जाने वाली मात्रा
- (ii) (E) एक वस्तु की मांग से होता है।
- (iii) (D) मांग के नियम से
- (iv) (A) द जनरल थ्योरी ऑफ एम्प्लायमेंट
- (v) (B) पूर्ति अपने लिये मांग स्वयं उत्पन्न कर लेती है।
- (vi) (C) एक दूसरे से प्रत्यक्ष संबंध रखते हैं।

उ.5 एक शब्द/वाक्य में उत्तर –

(1×7=7)

- (i) विशिष्टीकरण
- (ii) कुल लागत के बराबर होता है।
- (iii) प्रत्यक्ष संबंध
- (iv) संकल घरेलू उत्पाद
- (v) प्रभावी मांग
- (vi) शून्य से अधिक एवं एक से कम
- (vii) लाभ कमाना

उ.6 अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ –

(2)

- (i) किन वस्तुओं का कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाये।
- (ii) वस्तुओं का उत्पादन किसके लिये किया जाये।
- (iii) वस्तुओं के उत्पादन का ढंग क्या हो?

### अथवा

उ.6 आर्थिक समस्या का संबंध बैकल्पिक मानवीय आवश्यकताओं में सीमित साधनों का प्रयोग करने और इन साधनों का इस दृष्टि से उपयोग करने से है, कि आवश्यकताओं की अधिकतम संतुष्टि संभव हो सकें।

- उ.7 उत्पादन पर व्यय किये गये सभी भुगतान उत्पादन लागत कहलाते हैं इसमें पूंजी, श्रम, भूमि, आदि सेवाओं का पुरस्कार भी शामिल होता है। (2)

#### अथवा

- उ.7 मानवीय आवश्यकताओं को संतुष्ट करने की क्षमता उपयोगिता कहलाती है।
- उ.8 बाजार में वस्तु की मांग एवं वस्तु की पूर्ति द्वारा निर्धारित मूल्य बाजार संतुलन मूल्य होता है। इसमें क्रेता एवं विक्रेता किसी प्रकार की परिवर्तन नहीं चाहते हैं। यह उस बिन्दु पर निर्धारित होता है जहाँ वस्तु की मांग रेखा एवं पूर्ति रेखा एक दूसरे को प्रतिच्छेद करती है। (2)

#### अथवा

- उ.8 किसी वस्तु की वह मात्रा, जो किसी निश्चित समय में कीमत विशेष पर बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध होती है, पूर्ति कहलाती है।
- उ.9 (1) सभी उपभोक्ता उचित कीमत दुकानों से प्राप्त वस्तुओं की मात्रा से संतुष्ट नहीं होते हैं। (2) इसके निर्धारण हेतु सरकार को खाद्य अनुदान की व्यवस्था करना पड़ती है, जिससे अनावश्यक बजट भार बढ़ता है। (2)

#### अथवा

- उ.9 वस्तु की जिस कीमत पर बाजार मांग, बाजार पूर्ति से अधिक होती है, वह स्थिति उस वस्तु की अधि मांग कहलाती है।
- उ.10 अंतिम वस्तुओं को दो भागों में बाँटा गया है। (2)
- (1) उपभोग वस्तुएँ
- (2) पूंजीगत वस्तुएँ

#### अथवा

- उ.10 जो वस्तुएँ अन्य वस्तुओं के उत्पादन में कच्चे माल के रूप में उपयोग होती हैं, मध्यवर्ती वस्तुएँ कहलाती हैं।
- उ.11 उत्पादन के चार कारक निम्न हैं – (2)
- भूमि, श्रम, पूंजी, संगठन

#### अथवा

- उ.11 राष्ट्रीय पूंजी के घटक निम्न हैं।
- भवन एवं इमारतें, उपकरण, सोना एवं चांदी के भंडार, शुद्ध विदेशी परिसंपत्तियाँ

- उ.12 विनियम की वह प्रक्रिया जिसमें कम से कम दो व्यक्ति अपनी वस्तु अथवा सेवाओं का एक दूसरे के साथ आदान प्रदान करके अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, वस्तु विनियम प्रवाली कहलाती है। (2)

### अथवा

- उ.12 देश के प्रत्येक व्यापारिक बैंक को अपनी कुल जमा राशि का एक निश्चित अनुपात कानून के अनुसार देश के केन्द्रीय बैंक के पास नकद कोष के रूप में जमा करना पड़ता है। इसे ही नकद कोष अनुपात (CRR) कहते हैं।

- उ.13 (1) आय में वृद्धि के साथ-साथ सीमांत उपभोग प्रवृत्ति बढ़ती है। (2) निर्धनों की सीमांत उपभोग प्रवृत्ति, धनिकों की अपेक्षा अधिक होती है। (2)

### अथवा

- उ.13 (1) सरकारी उपभोग  
(2) निजी उपभोग  
(3) सरकारी निवेश  
(4) निजी निवेश  
(कोई दो)

- उ.14 यह प्रति इकाई उपभोग है। यह व्यक्ति की आय पर निर्भर करती है। यह खरीदने की क्षमता से निर्धारित होती है। (2)

### अथवा

- उ.14 (1) अर्थ व्यवस्था में कोई सरकारी हस्तक्षेप नहीं होता है।  
(2) मजदूरी की दर एवं कीमतें लोचपूर्ण होती हैं।  
(3) अर्थव्यवस्था में मृदा प्रसार के बिना भी पूर्व रोजगार रहता है।  
(कोई दो)

- उ.15 विनियोग में वृद्धि के कारण राष्ट्रीय आय में वृद्धि के बीच के अनुपात के विवियोग गुणक कहते हैं। (2)

### अथवा

- उ.15 यदि आय का संतुलन स्तर पूर्ण रोजगार के स्तर से पहले निर्धारित होता है तो यह अभावी मांग की स्थिति होती है।

- उ.16 (1) किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा  
(2) वस्तु को क्रय करने का साधन  
(3) साधनों को प्राप्त करने की तत्परता (3)

### अथवा

- उ.16 (1) भविष्य में वस्तु की दुर्लभता की संभावना।  
 (2) उपभोक्ता की अज्ञानता  
 (3) गिफिन विरोधाभास  
 (4) प्रतिष्ठा सूचक वस्तुओं पर लागू नहीं।  
 (कोई तीन)

उ.17

	पूरक वस्तुएँ		स्थानापन्न वस्तुएँ
(1)	किसी वस्तु का प्रयोग अन्य कि दूसरी वस्तु के अभाव में नहीं किया जा सकता।	(1)	किसी वस्तु का प्रयोग किसी अन्य वस्तु के स्थान पर किया जा सकें तो स्थानापन्न वस्तु कहलाती है।
(2)	एक वस्तु की कीमत बढ़ने पर दूसरी वस्तु की मांग कम हो जाती है।	(2)	एक वस्तु का मूल्य बढ़ जाने पर स्थानापन्न वस्तु की मांग बढ़ जाती है।
(3)	उदाहरण – बेड – वाल पेन – स्याही	(3)	उदाहरण – चाय – कॉफी, गुड़ – चीनी आदि

### अथवा

उ.17

	व्यक्तिगत मांग		बाजार मांग
(1)	यह एक व्यक्ति की मांग होती है।	(1)	यह बाजार में उपस्थित बहुत सारे व्यक्तियों की होती है।
(2)	एक व्यक्ति इसको प्रभावित कर सकता है।	(2)	एक व्यक्ति कभी भी इसे प्रभावित नहीं कर सकता।
(3)	यह मूल्य एवं एक व्यक्ति द्वारा मांगी गई मात्रा में फलनात्मक संबंध को दर्शाती है।	(3)	यह मूल्य एवं विभिन्न व्यक्तियों द्वारा मांगी गई मात्रा में फलनात्मक संबंध को दर्शाती है।

- उ.18 (1) क्रेताओं एवं विक्रेताओं की अधिक संख्या।  
 (2) एक रूप वस्तु  
 (3) बाजार का पूर्ण ज्ञान  
 (4) बाजार में फर्मों का स्वतंत्र प्रवेश एवं बहिर्गमन  
 (कोई तीन)

(3)

(3)

### अथवा

उ.18 फर्म की पूर्ति की कीमत लोच (ES) = 1.25

प्रारंभिक कीमत  $P_1 = 10$  ₹

अंतिम कीमत  $P_2 = 50$  ₹

प्रारंभिक उत्पादन  $Q_1 = 5$  इकाईयाँ

कीमत में परिवर्तन  $(\Delta P) = P_2 - P_1$

$$= 50 - 10 = 40 \text{ ₹}$$

$$Es = \frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P_1}{Q_1}$$

$$1.25 = \frac{\Delta Q}{40} \times \frac{10}{5}$$

$$1.25 = \frac{\Delta Q}{20} \therefore \Delta Q = 1.25 \times 20 = 25.5 \text{ min}$$

अंतिम उत्पादन  $Q_2 = \Delta Q + Q_1$

$$= 25 + 5 = 30 \text{ इकाईयाँ}$$

उ.19 मुद्रा की मांग – यह सौदों के संचालन के लिए आवश्यक होती है। वस्तुओं का मूल्य यह निश्चित करता है, कि लोग कितनी मात्रा में मुद्रा अपने पास रखेंगे। आय बढ़ने पर मांग में वृद्धि होगी एवं वचत में भी वृद्धि होगी। तथा लोग अपनी आय को नगद के स्थान पर बैंक में रखना पसंद करेंगे।  
मुद्रा की पूर्ति – मुद्रा की पूर्ति सरकार द्वारा बैंकों के माध्यम से नगदी एवं बैंक जमाओं के माध्यम से होती है। मुद्रा की पूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण केन्द्रीय बैंक के माध्यम से होता है।

(3)

### अथवा

उ.19 (1) रिजर्व बैंक किसी प्रकार के खाते नहीं खोल सकता।

(2) रिजर्व बैंक जमा राशि पर ब्याज नहीं दें सकता।

(3) अपने कार्यालय को छोड़कर कोई अचल संपत्ति नहीं खरीद सकता।

(4) किसी कंपनी के शेयर नहीं खरीद सकता।

उ.20 अनाधिमान बक्रों की विशेषताएँ –

(4)

(1) दो अनाधिमान बक्र कभी एक दूसरे को नहीं काटते।

(2) अनाधिमान बक्र बांये से दांये, नीचे की ओर ढलवा होते हैं।

(3) उच्च अनाधिमान बक्र उपयोगिता के उच्च स्तर को दर्शाता है।

(4) अनाधिमान बक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होते हैं।

### अथवा

उ.20 जिन वस्तुओं की मांग उपभोक्ता के आय के विपरीत होती है, उन्हें निम्न स्तरीय वस्तुएँ कहते हैं। अर्थात् उपभोक्ता की आय बढ़ने पर इन वस्तुओं की मांग कम होने लगती है। एवं आय कम होने पर इस प्रकार की वस्तुओं की मांग बढ़ जाती है। इन वस्तुओं को गिफिन वस्तुएँ भी कहते हैं। जैसे – देश घी की तुलना में डालडा निम्न स्तरीय खाद्य पदार्थ अथवा मोटे अनाज आदि।

उ.21 उत्पादन फलन –

(2+2)

$$Q = 2L^2 K^2$$

यहाँ  $L = 5$ , तथा  $K = 2$

$$Q = 2 (5)^2 (2)^2$$

$$Q = 2 (25) (4)$$

$$Q = 200 \text{ इकाइयाँ}$$

पुनः  $Q = 2L^2 K^2$

$$L = 0 \text{ एवं } K = 10$$

$$Q = 2 (0)^2 (10)^2$$

$$Q = (0) (100)$$

$$Q = 0 \text{ इकाई}$$

### अथवा

उ.21 जब किसी वस्तु के उत्पादन में प्रयोग होने वाले सभी साधनों को बढ़ाया जाता है, तो इसका उत्पादन पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसका अध्ययन पैमाने के प्रतिफल के अंतर्गत किया जाता है। दीर्घकाल में उत्पादन के सभी साधन परिवर्तनशील होते हैं।

पैमाने के प्रतिफल की तीन अवस्थाएँ होती हैं।

(1) पैमाने के बढ़ते प्रतिफल

(2) पैमाने के घटते प्रतिफल

(3) पैमाने के समान प्रतिफल

उ.22 **संतुलित बजट** – वह बजट, जिसमें आय एवं व्यय समान होते हैं, संतुलित बजट कहलाता है।

**असंतुलित बजट** – वह बजट, जिसमें आय एवं व्यय समान होते हैं, असंतुलित बजट कहलाता है।

**असंतुलित बजट** – जब किसी कारण बश सरकार पूरे वित्तीय वर्ष का बजट प्रस्तुत करने में असमर्थ होती है तब वर्ष के कुछ माहों के लिए आय-व्यय का प्रावधान करना अंतरिम बजट कहलाता है।

### अथवा

उ.22 सार्वजनिक वस्तु का प्रयोग सभी लोग करते हैं। सार्वजनिक वस्तु सरकार के द्वारा सभी के हित एवं सुविधा के लिए बनाई जाती है। इस पर किसी का व्यक्तिगत अधिकार नहीं होता है। कोई भी व्यक्ति इस वस्तु के अधिपत्य का दावा नहीं कर सकता है। इस वस्तु का प्रयोग करने पर किसी भी प्रकार का किराया। टेक्स नहीं देना होता है। अतः सार्वजनिक वस्तु को सरकार द्वारा ही प्रदान करना चाहिये। (4)

उ.23 विदेशी विनियम दर को प्रभावित करने वाले तत्व – (4)

- (1) विदेशी व्यापार नीति
- (2) बैंक की क्रियाएँ
- (3) चलन दशाएँ
- (4) राजनीतिक दशाएँ
- (5) मध्यस्थों की क्रियाएँ
- (6) स्टॉक एक्सचेंज अथवा सट्टा बाजार  
(किन्हीं चार का वर्णन करने पर)

### अथवा

उ.23 भुगतान संतुलन के पूंजीगत खाते में सम्मिलित मदें –

- (1) सरकारी ऋण
  - (2) बैंकिंग पूंजी
  - (3) सकल ऋण भुगतान
  - (4) मुद्रा कोष से पुनः क्रय
  - (5) अल्प कालीन निजी निवेश
  - (6) दीर्घकालीन निजी निवेश
-